

वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत

(ऐतिहासिक विश्लेषण)

आनन्दसिंह परिहार

आनन्दसिंह परिहार, जोधपुर

प्रस्तावना

त्यौहार व मेले किसी भी प्रदेश की जीवन सरिता होते हैं जिसके बिना किसी भी प्रदेश की संस्कृति का अस्तित्व धारणा का नामोनिशान नहीं होता है। सामाजिक जीवन और उससे संबंधित संस्थाओं में लोकोत्सवों का महत्वपूर्ण स्थान है। स्थानीय संस्कृति की अभिव्यक्ति लोकोत्सवों में स्पष्ट देखी जा सकती है, क्योंकि उनके साथ प्राचीन परम्पराएं तथा विचारधाराएं जुड़ी रहती हैं। ये विचारधाराएं और परम्पराएं धार्मिक, ऐतिहासिक अथवा सामाजिक होती हैं। जब-जब लोकोत्सवों का आयोजन होता है तो प्रांत के सांस्कृतिक पहलू के एक स्वरूप की अभिव्यक्ति होती है, जिसमें प्रत्येक तबके का व्यक्ति सम्मिलित ढंग से बड़े उत्साह से भाग लेता है। मारवाड़ में प्राकृतिक वातावरण में विभिन्नता होने से लोकोत्सवों का भी एक विचित्र स्वरूप बन गया है। अलग-अलग महोत्सवों में अलग-अलग स्थानों में वेश-भूषा, नाच-गान का प्रदर्शन अपनी विशेषताओं को लेकर इस तरह रचे जाते हैं कि लोकोत्सवों में नये जीवन का संचार हो जाता है। इन अवसरों में गाये जाने वाले लोकगीतों अथवा कही जाने वाली लोक कथाओं में धार्मिक निष्ठा तथा ऐतिहासिक तथ्य छिपे पड़े हैं जो मारवाड़ की संस्कृति के द्योतक हैं, जिन्हें उजागर कर जन-जन तक पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य है। इनमें छिपी ऐतिहासिकता से भावी पीढ़ी को गर्व हो कि उसके पुरखों ने विषम परिस्थितियों में भी अपने विवेक, बुद्धिमता, आत्मविश्वास व बलिदान से अपनी धरा को सिंचित किया है। जिन महापुरुषों ने त्याग व आत्म बलिदान से अपनी मातृभूमि की सेवा की या नैतिक जीवन और लोकोपकार की वृत्ति अपनाई तो समाज ने उनको देवत्व का स्थान दिया और उत्तरोत्तर

उनके पूजन का तथा उनकी मनौती मानने की प्रथा चल पड़ी। इनमें विश्वास रखने वाला अधिकांश में वह वर्ग था जो युद्ध प्रिय था या जिसके जीवन का आधार कृषि अथवा हस्तकला था।

मारवाड़ की भूमि वीर-प्रसविनी रही है और यहाँ के निवासी शौर्य प्रधान जीवन को बिताते रहे हैं। इसलिए वीररस-प्रधान तथा स्वाभिमान एवं नैतिकता से ओत-प्रोत साहित्य सर्जन की परम्परा यहाँ के जीवन का अंग बन गई है। जन मानस की अभिव्यक्ति का स्वरूप हमें लोक गाथाओं और गीतों में भी मिलता है। साहित्य लिखित या मौखिक हो उसका विकास मानव मन की अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों से हुआ है। हर युग में इसके द्वारा जन सामान्य के सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन के आदर्श की रचना हुई है। इसी कौतूहल से जन्मे प्रश्नों ने मुझे राव की गैर पर शोध-कार्य करने को प्रेरित किया।

राव की गैर में छिपे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक जीवन के आदर्शों के ऐतिहासिक तथ्य जो सदियों से लोकोत्सव के द्वारा प्रकट की जाने वाली श्रद्धा, विश्वास व धार्मिक निष्ठा का प्रतीक है, की किस प्रकार इष्ट देव भैरव की कृपा से युद्ध में विजयी होते हैं, जिसे सदियों तक संजोये रखना भी अपने आप ने अनूठा है। इसी मूल्य आधारित परम्परा जो सदियों से निकलने वाले राव जी के बारे में जानने की उत्सुकता हुई कि आखिर मैं इतने वर्षों से जो देखता आ रहा हूँ पर कभी सोचा नहीं कि इसके पीछे का छिपा हुआ इतिहास क्या है? सामान्यतः सभी त्यौहारों को मनाने का कोई ना कोई उद्देश्य या मान्यता होती है। इसी उत्सुकता ने मन में कई प्रश्न उत्पन्न हुए कि राव का क्या अर्थ है और क्यों, उत्सव कैसे और कब शुरू हुआ? एक ही जाति के एक ही गौत्र को ही राव बनाया जाता है। परन्तु इसी जाति के अन्य गौत्र के लोगों को राव क्यों नहीं बनाया जाता है? चाहे वे उसी क्षेत्र में निवास करते हों। राव चयन प्रक्रिया क्या है व मण्डोर के अन्दर ही राव क्यों मनाया जाता है, अन्यत्र नहीं। राव के हाथ में मूसल देना व हजारों लोगों द्वारा हथियार सहित जिसमें सभी आयु के व्यक्ति शामिल होते हैं, एक ही उद्घोष के साथ भैरूजी के आगे नमन कर नागकुण्ड में जल

क्रीड़ा करने के बाद क्यों विसर्जित होते हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए इतिहास के कुछ पन्ने पलटने शुरू किये। शुरुआत में कोई ठोस जानकारी नहीं मिली पर मेरा दृढ़ निश्चय था कि अवश्य भी इसके पीछे कोई ना कोई ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि अवश्य है जिसमें गहलोत गौत्र की संस्कृति व मान्यता छुपी हुई है, जो गहलोतों द्वारा सदियों से इसे संजोए रखा है। वर्ष 2017 होली के पहले मैं और जसवंत गहलोत सबसे पहले मण्डोर में बसने वाले गहलोत बुजुर्गों से मिले, उनका एक ही जवाब था कि सदियों से राव गैर निकलती है पर इसका उद्भव कब हुआ और कैसे हुआ, इसकी जानकारी नहीं दे सके। फिर मैंने अपनी जाति के राव/भाटों से जो समाज की वंशावली लिखते हैं उनसे मिला और गहलोतों के पूर्ण इतिहास की जानकारी लेने मथानिया, बाड़मेर, बालोतरा, नागौर, कुचेरा, पाली, सोजत, किशनगढ़, बीकानेर, पीपाड़, मेड़ता, चित्तौड़गढ़ आदि गया एवं सभी से जानकारी हासिल की। इसमें लगभग सभी रावों ने एक समान जानकारी दी कि राव हेमा गहलोत द्वारा मण्डोर से तुर्कों को हटाकर हिन्दू राजा राव चूंडाजी को राज दिलाने में व तिलक करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

मार्च 2017 के प्रथम सप्ताह में मैंने राव हेमा गहलोत की इतिहास व ऐतिहासिक राव महोत्सव की विस्तृत जानकारी श्री जसवंत गहलोत, श्री हरीसिंह आर्य, श्री विनोद गहलोत, डॉ. अशोक गहलोत, श्री कुलदीप सिंह देवड़ा, श्री करणसिंह भाटी, श्री सुरेश गहलोत, श्री ताराचंद गहलोत, श्री अजय परिहार, श्री धीरेन्द्रसिंह गहलोत को अवगत करवाई। हम सभी ने योजना बनाकर ऐतिहासिक जानकारी देने हेतु मण्डोर के प्रत्येक बेरे पर जाने का निश्चय किया। 6 मार्च 2017 से 10 मार्च 2017 तक क्रमशः नागौरी बेरा, खोखरिया बेरा, न्यू पदाला बेरा, मण्डोर खास, भलावता बेरा, लाला बेरा, फूलबाग, बड़ा बेरा, मंडावता बेरा, गोपी बेरा आदि में सभा आयोजित कर राव हेमा गहलोत की ऐतिहासिक जानकारी दी गई। 10 मार्च 2017 को आर्यसमाज भवन मण्डोर में सभा आयोजित कर श्री हेमसिंह गहलोत, संतोष सिंह गहलोत एवं मण्डोर क्षेत्र के सम्मानीय सजातीय बंधुओं की

उपस्थिति में राव हेमा गहलोत के इतिहास की जानकारी उपलब्ध करवाई व राव महोत्सव के गौरवशाली इतिहास को जन-जन तक पहुँचाने का अनुरोध किया। हमारी संस्थान सैनिक क्षत्रिय माली सांस्कृतिक संवर्धन एवं इतिहास शोध संस्थान, जोधपुर ने 625 ई. राव महोत्सव (13 मार्च 2017) के अवसर पर सबसे आकर्षक गैर को 51,000 रुपये 'वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत' नकद पुरस्कार देने की घोषणा की। श्रीमान् अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री राजस्थान मुख्य अतिथि के द्वारा 313 गोरां धाय निर्वाण दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम 19-05-2017 टाउन हॉल जोधपुर में पांच गेरों को बराबर राशि में वितरित किया गया। मैंने राव हेमा गहलोत का अश्वारूढ़ चित्र भी बनवाया जिसका लोकार्पण परमहंस श्री 108 श्री रामप्रसाद जी महाराज, रामद्वारा सूरसागर द्वारा 28-02-2018 में होली से पहले करवाया गया।

हर त्यौहार के पीछे कोई ना कोई संस्कृति होती है। इन त्यौहारों व मेलों का एक काल में तो लोकप्रियता अधिक हो सकती है परन्तु दूसरे काल में महत्ता अन्य कारणों से कम हो सकती है पर उसकी मूल संस्कृति में बदलाव नहीं आता है और इसी कारण आने वाली पीढ़ी मूल रूप से संजोए नहीं रख पाती है। ऐसा ही राव जी की गैर के साथ हुआ। राव हेमा गहलोत के त्याग, पराक्रम व वीरता की कहानी जुबानी रह गई जो धीरे-धीरे मूल शब्द रावजी की गैर तक ही सिमिट गई। अतः मूल घटना का इतिहास सही रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी आने वाले वंशजों को नहीं बताने के कारण राव जी की गैर के वास्तविक रूप से वंचित रह गए। इसका मुख्य कारण सैनिक क्षत्रियों में इतिहास लिखने की परम्परा नहीं होने के कारण से केवल राव/भाटों द्वारा लिखित वंशावलियों में ही कुछ-कुछ या कम वर्णन मिलता है। भारत की आजादी के बाद राव भाटों द्वारा समाज की वंशावलियों लिखने में कम रुचि व समाज द्वारा इनकी उपेक्षा के कारण इन बहियों की महत्ता की समझ न होने के कारण इन्होंने बहियों को गलाकर ठाठिये (कागज से बने विशेष बर्तन) बना दिये या उचित सार संभाल नहीं होने के कारण दीमक लगने से बर्बाद हो गई। कुछ राव भाटों के पास अब भी अपूर्ण

वंशावली उपलब्ध है और सैनिक क्षत्रिय समाज का इतिहास मारवाड़ में लिखे गये इतिहास के पत्रों पर बिखरी हुई सामग्री के रूप में केवल पुरुष व महिलाओं के नाम के आधार पर ही उपलब्ध है। इन बहियों में राजपूत कुल छोड़ने व माली कुल होने व राव हेमा गहलोत को तुरकाणी से हिन्दवाणी का अवश्य वर्णन मिलता है। मरदुमशुमारी के पृ. 80 से 91 तक में ''राजपूत माली'' जाति का वर्णन किया गया है।

वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत के बारे में लोगों को अधिक जानकारी नहीं है। इस पुस्तक के माध्यम से उनकी कीरत कथा उजागर करना मेरा उद्देश्य है कि किस प्रकार मण्डोवर के रजकणों की अरुणिया में अपने प्रधानी नेतृत्व में, सुभट्ट साथियों द्वारा मातृ-भूमि की आजादी के लिए रक्त बहाया। मण्डोवर की धरती इनके व इनके साथी सुभट्टों के प्रति सदा नतमस्तक है। ऐसे वीर शिरोमणि हेमा गहलोत के त्याग व बलिदान को हम भुला देंगे तो क्या इतिहास हमें माफ करेगा? कभी नहीं। हमें इतिहास की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता जाता रहता है, धन से हीन होने पर कोई नष्ट नहीं होता। किन्तु इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने पर विनाश निश्चित है। हमें हर कीमत पर अपने गौरव को बचाना व पोषण करते रहना चाहिए। ऐसे वीर-शिरोमणि, सती-शिरोमणि एवं संत शिरोमणि के वीरत्व, त्याग, बलिदान एवं ज्ञान को सदैव संचित कर संजोकर रखना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी सगर्व गौरान्वित हो सके। परन्तु आज की पीढ़ी जिस तेजी के साथ अपनी भाषा, इतिहास, रीति-रिवाज, अदब-कायदा, संस्कृति व पहचान से परे जा रही है सोचने और विचारणीय विषय है।

वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत पर पुस्तक प्रकाशन में विशेषरूप से इतिहासवेत्ता (पुरोधा) प्रो. जहूरखाँ मेहर साहब की प्रेरणा, मार्गदर्शन, आशीर्वाद व प्रोत्साहन से ही संभव हो पाया। लेखन में कवि-आलोचक डॉ. आईदानसिंह जी भाटी, श्री श्यामसुन्दर भारती, श्री रतनसिंह चांपावत व श्री मोहनलाल जी गहलोत (बालोतरा) के सहयोग के लिए आप सभी का हृदय से धन्यवाद व शोध-कार्य में जसवंत गहलोत व धीरेन्द्र सिंह गहलोत पुत्र मिस्त्री श्री आनन्द प्रकाश गहलोत (मंडावता, मण्डोर), भाटी

चौराहा, रातानाडा ने शोध-यात्रा व प्राथमिक स्रोतों के बारे में जानकारी हासिल करने में मदद के लिए आभार। श्री प्रेमसिंह कच्छवाहा (सेवानिवृत्त, निदेशक, शिक्षा विभाग, जोधपुर) द्वारा प्रूफ रीडिंग में मदद के लिए धन्यवाद।

राव बहियों में दर्ज ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करने में श्रीमती कमला देवी पत्नी स्व. देवराजजी भट्ट (सोजत), जिन्होंने अपने पास संचित महत्त्वपूर्ण इतिहास उपलब्ध करवाया। इसके साथ ही श्री मुरली मनोहर राव (मथानिया) ने समय-समय पर जानकारी देने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया। अन्य राव श्री राजेन्द्रसिंह, श्री धनराज, सोहनलाल एवं शंकरलाल इन सभी महानुभावों का आभार व्यक्त करता हूँ।

इतिहास एक ऐसा वृक्ष है जिसे फलने-फूलने देना चाहिए। इसलिए कहा गया है—

''जो वृक्ष अपनी जड़ों से नफरत करता है उसे अपने पनपने की गलतफहमी नहीं होनी चाहिए।''

है, अंधकार में वह स्थान
जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं
है, मुर्दा वह देश तथा समाज
जिसका कोई इतिहास नहीं।

□□□

शब्द संकेत

प्रधान—यह राज्य का प्रधानमंत्री होता था। राज्य की सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था उसके अधिकार में होती थी। प्रधान राजनीति और राज्य व्यवस्था में निपुण होता था। प्रधान का पद राज्य में सबसे बड़ा पद माना जाता था तथा इस पद की एवज में शासक की ओर से जागीर का बड़ा पट्टा दिया जाता था। राजा की अनुपस्थिति में सारा कार्यभार उसी पर होता था। राजा के आदेश पर सन्धि-विग्रह, चढ़ाई, मुगल दरबार में उपस्थित होना आदि सभी कार्य प्रधान करता था।

हाकिम—प्रत्येक परगने में एक हाकिम नियुक्त किया जाता था जो राजस्व वसूली और राज व्यवस्था आदि कार्य देखता था। वह कस्बे के दुर्ग में आवश्यक साज-समान सहित रहता था। वह अपना दीवान लगता था तथा मुकद्दमों की सुनवाई भी करता था। परगने की सुरक्षा का प्रबंध भी उसके जिम्मे होता था। आवश्यकता पड़ने पर उसे आक्रान्ताओं से मुकाबला भी करना पड़ता था। शासकों को जब बाहर से किसी परगने की सूबेदारी मिलती थी तो उसके प्रमुख अधिकारी को भी हाकिम का पद दिया जाता था।

राव—आर्यावत् के अंतिम हिन्दू सम्राट हर्षवर्धन ने अपने भाई बन्धुओं को, जो बलवान, बुद्धिमान व गुणवान योद्धा थे, उन्हें राजकीय कार्य करने हेतु राव की पदवी देकर सौंपे। धीरे-धीरे राव पदवी राजकीय पदवी बन गई। यह क्षत्रियों को उनकी वीरता पर दी जाने लगी और बाद में पदवी वंशागत

चलने लगी। यह राज्य का मुख्य पद होता था। राव शब्द राजाओं की पदवी या राजाओं के सरदार को दी गई पदवी होती थी। जिनके पास उस क्षेत्र की सभी शक्तियाँ निहित होती थी।

"नागौर रे कोट री पोळ जिको इतरी भुंजाई करे अर अठवारी रा घोड़ा आठ दे अर आठ सिरपाव दे टिको पोळ नीसरे। आ तंलाक राव चूंडे काठी। और कह्यो इन पोळ ने कोई पाडण पावै नहीं। इन पोल रौ नांव चामड पोळ थौ पठाणा कनासु नागौर लियो तरै चूंडो राव कहाणों। (रघुवीर सिंह, मनोहर सिंह राणावत—जोधपुर राज्य की ख्यात पृ.सं.-39)।"

राव बहियों के अनुसार गहलोत राव ईसरदास के पिता अल्हाराव जो गहलोत राजपूत थे, के पास भी राव की पदवी थी। इन्हीं अल्हाराव के वंशजों में हेमाराव तक यह परिवार अपने नाम के साथ राव उपाधि का उपयोग करते थे। कालांतर में बदली परिस्थितियों ने राव उपाधि के उपयोग को छोड़ना पड़ा होगा।

❑❑❑

अनुक्रम

□□□

वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत

(ऐतिहासिक विश्लेषण)

ऐतिहासिक मण्डोर

माण्डव्यपुर, मंडोर, मरु, मरुस्थल, मरुस्थली, मरुमेदिनी, मारव, मरुदेश, मरुधन्वम् और मरुकान्तर के नाम से प्राचीन पुस्तकों में मिलता है।[1] वैदिक साहित्य में ऋग्वेद में मरु शब्द आया हुआ है।[2] वाल्मिकी रामायण के अनुसार जब रामचन्द्र जी वानर सेना लेकर समुद्र किनारे पहुँचे तो समुद्र ने मार्ग नहीं दिया तब श्री रामचन्द्रजी ने समुद्र को सुखाने हेतु ब्रह्मदण्ड नाम का तीर कमान में चढ़ाया तब समुद्र ने डर के मारे गिड़गिड़ाते हुए कहा द्रुमकुल्य नाम का हिस्सा मेरे राज्य के अधीन है। मुझे भी पापी बनाते हैं आप वहाँ पर तीर छोड़ दें। तब श्री रामचन्द्र जी ने ब्रह्मदण्ड नाम का अग्निबाण छोड़ा जिससे पूरा इलाका सूख गया जो मरुखेतर जाना जाता है।[3]

रामायण काल में द्रुमकुल्य के किनारे आभीर आदि दस्यू जातियाँ निवास करती थी।[4]

भागवत ने इस प्रदेश को मरुधवम् कहा है एवं यहाँ आभीर जातियों के अस्तित्व का उल्लेख है।[5] आभीरों का उल्लेख संवत् 918 (861 ई.) के कक्कुक के घटियाला अभिलेख में भी मिलता है। अभिलेख में कहा गया है कि 'कक्कुक ने इस क्षेत्र में आभीरों के उपद्रवों को शांत किया एवं रोहिंसकूप (वर्तमान घटियाला) में विचित्र विधि युक्त बाजार का निर्माण किया। इससे स्पष्ट है कि रामायण कालीन आभीर जाति का इस प्रदेश में विक्रम की दसवीं सदी तक प्रभुत्व रहा और यह जाति इस समय तक भी दस्यूकर्म ही करती रही।[6] इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है मरुप्रदेश भी मानवीय सभ्यता का केन्द्र किसी न किसी रूप में अवश्य रहा था।

महाजनपदों काल आठवीं-सांतवीं शताब्दी ई.पू. से पांचवीं शताब्दी ई.पू. तक यह भू भाग अवन्ति राज्य का हिस्सा रहा होगा। महाजन पद कालीन साहित्य में हमें इस प्रदेश का कोई उल्लेख विशेष नहीं मिलता है।

अमरकोश के लेखक ने भूमि वर्ग के शब्दों के अन्तर्गत ''समानो मरु धन्वानो'' कहकर मरुप्रदेश का उल्लेख किया है। मरु का अर्थ मरना और रेगिस्तान है अर्थात् जहां यात्री जल बिना मर जाते हैं उसे मरुप्रदेश कहते हैं।[7]

मौर्यकाल में इस प्रदेश पर सम्भवतः मौर्य शासकों का आधिपत्य स्थापित हो गया था। जयपुर संभाग में सम्राट अशोक के शिलालेख की उपलब्धि से स्पष्ट है कि राजस्थान अशोक के साम्राज्य का अंग बन चुका था।[8] मौर्य साम्राज्य का अंग बन चुका था। मौर्य साम्राज्य में मरुप्रदेश के पूर्व मथुरा, दक्षिण-सुराष्ट्र, पूर्व-दक्षिण-उज्जयिनी, पश्चिम में सौवीर, पूर्व में शाकल प्रदेश थे। इस समय पश्चिमी-राजस्थान यानी मरुप्रदेश में बस्तियां नहीं बसी थी। शक सरदारों ने लगभग 110 ई. पू. सौवीर देश या सिन्ध प्रान्त को जीतकर राज्य स्थापित किया।

कुषाण वंशीय शासक कनिष्क के वंशज ने भारत के मध्य देश में एक शताब्दी राज किया। शक रुद्रदामा के अधीन सुराष्ट्र, साबरमत्ती, अवन्ति जनपद थे।[9]

188 ई. में आभीरों ने सिन्धु, सौवीर और मरु को अपने अधीन किया।[10]

भारशिवनाग-पूर्वी पंजाब और राजस्थान में इस गणराज्य मेखला के स्वतंत्र हो उठने से गंगा कांठे से ऋषि साम्राज्य स्वतः उठ गया। इन राजाओं के नामों के अन्त में प्रायः नाग शब्द लगता था। पद्मावती के भारशिव राजा भवनाग ने अपनी बेटी का विवाह प्रवरसेन वाकाटक के बेटे गौमती पुत्र से कर उसे अपना उत्तराधिकारी बना दिया। प्रवरसेन ने पारियात्रिक अर्थात् राजस्थान का बड़ा अंश भी अधीन किया।[11] इस समय यहाँ नागवंशीय शासकों का शासन भी रहा होगा जिनकी राजधानी अहिछत्रपुर (नागौर) थी।

यहाँ कतिपय स्थानों का नामकरण नाग अथवा उसके पर्यायवाची शब्दों के आधार पर हुआ है। नागौर का प्राचीन अहिछत्रपुर, नाम से सम्बन्धित है इसी प्रकार मण्डोर में नागाद्री व नाग गंगा है। जोधपुर से आरम्भ होने वाली पहाड़ी शृंखला का नाम भी भौगिशैल है तथा भौगि नाग का ही पर्यायवाची शब्द है।

यहाँ नाग जाति का प्रभुत्व स्वीकार किया गया है।[12]

आदि सहर मंडोवर थौ। सासत्र माहे नै पदमपुराण मांटे वात छै। भोगसील (भोगिशैल) परवत मेर रौ बेटो कहै छै तिण रो भोगसील महातम घणो कहौ छै। मांडलेस्पुर (मंडलेश्वर) महादेव, नागाद्रीह (नागादरी) नदी, सुरज कुंड रो घणो माहतम वषाणीयो छै।[13]

गुप्तकाल में समुद्रगुप्त ने प्रायः समूचे भारत को जीत कर अपने अधीन कर लिया था। इस समय मारवाड़ भी गुप्त साम्राज्य का अंग बन गया। मण्डोर दुर्ग के ध्वंशावशेषों में तोरण द्वार के दो शिलाखण्डों पर कृष्णलीला की प्रतिभाएँ उपलब्ध है। इससे प्रतीत होता है कि गुप्तों का प्रभाव भी मरु प्रदेश पर रहा होगा।[14]

वाकाटक प्रशासन में हुणों का आक्रमण हुआ। हूण तोरमाण के बेटे मिहिरकुल जो पशुपति (शिव) का उपासक था, ने पंजाब, कुरुक्षेत्र, राजस्थान को अपने अधीन कर लिया परन्तु यहाँ की जनता स्वयं अपनी रक्षा को उठ खड़ी हुई। उनका अगुआ ''जनेन्द्र'' (जनता का नेता) यशोधर्मा था। उसने दुर्बल गुप्तों के साम्राज्य को अपने हाथ में लिया और जनता की सेना खड़ी कर अनेक लड़ाइयों में हूणों को हराकर अपने अधीन कर लिया। यशोधर्मा ने अपना कोई राजवंश नहीं चलाया।[15]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मण्डोर के आस-पास धीरे-धीरे आभीरों के साथ यौधेय, सातवाहन, वाकाटक, गुप्त, हूण, कुषाण, शक और नाग समुदायों के बसने के संकेत मिलते हैं।

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भीनमाल को गुजरात (गुर्जरात्र) की राजधानी बताया।[16] डीडवाना के शिवा नामक ग्राम से प्रान्त प्रतिहार भोजदेव के

एक दान पत्र (वि. सं. 900) (843 ई.) से ज्ञात होता है कि मारवाड़ का काफी हिस्सा गुजरात में शामिल हो गया था।[17]

हर्ष की मृत्यु उपरान्त कन्नौज पर प्रतिहार राजा मिहिर भोज का अधिकार हो जाता है (लगभग 836 ई.) इन्हीं के वंशज प्रतिहार नागभट्ट द्वितीय का एक अभिलेख वि. सं. 872 (815 ई.) जोधपुर जिले में स्थित बुचकला नाम ग्राम में मिला।

इस अभिलेख के अनुसार यह प्रदेश नागभट्ट के साम्राज्य का एक हिस्सा था। इस नागभट्ट के पिता वत्सराज का नामोल्लेख ओसियां की जैन मन्दिर प्रशस्ति में भी हुआ है। संवत् 840 (783 ई.) में जिनसेन नामक जैन आचार्य द्वारा लिखित हरिवंश पुराण में भी इसका नामोल्लेख हुआ है और इसे पश्चिम का शासक बताया है। इसके साथ ही प्रतिहारों के एक दूसरे घराने का भी अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध होता है। जोधपुर से उत्तर-पश्चिम में लगभग 20 मील की दूरी पर स्थित घटियाला (प्राचीन नाम रोंहिसकूप) नामक ग्राम में प्रतिहार शासक कक्कुक के अभिलेख प्राप्त हैं। ये अभिलेख चैत्र शुक्ला द्वितीया वि. सं. 918 (861 ई.) के हैं। कक्कुक के भाई बाउक का संवत् 894 (837 ई.) का अभिलेख जोधपुर नगर की शहरपनाह में प्राप्त हुआ था। इन अभिलेखों के प्रतिहार हरिशचन्द्र के कक्क तक की वंशावली समान रूप से प्राप्त होती है। घटियाला अभिलेख में कक्क का पुत्र कक्कुक बताया गया है व जोधपुर अभिलेख में कक्क का पुत्र बाउक बताया गया है। स्पष्ट है कक्क के दो पुत्र थे एक बाउक व दूसरा कक्कुक। कक्क का राज्य इन दोनों में विभाजित हो गया। परिणामस्वरूप कक्कुक ने रोहिंसकूप को अपनी राजधानी व बाउक ने मण्डोर को अपनी राजधानी बनाया। इस प्रकार दसवीं सदी तक मारवाड़ के उत्तरी भू-भाग पर प्रतिहारों का शासन बना रहा।[18]

अतः यह प्रमाणित होता है कि प्रथम बार मण्डोर पर स्वतंत्र शासक के रूप में बाउक ने प्रतिहारों की सत्ता स्थापित की जो नागभट्ट का वंशज था। इसी नागभट्ट ने सिंध के अरब शासकों को हराकर ख्याति पाई थी।

उसकी राजधानी भीनमाल थी और मारवाड़ से भरूच तक इसका राज्य था। उसके पूर्वज किसी राजा के प्रतिहार अर्थात् द्वारपाल थे। वही प्रतिहार शब्द उनके वंशजों का उपनाम हो गया।[19] इसी नागभट्ट के नाम से नागाद्रही व नागकुण्ड होना चाहिए। नागकुण्ड के पास ही मण्डोर किले की दीवार के पास एक कुआँ है जहाँ से पानी नागकुण्ड में आता है। नागाद्रही कभी वर्षाती नदी रही होगी जिसके दोनों ओर खेती होती थी जिसके एक तरफ काला गोरा भैरव मन्दिर व भैरव बावड़ी है और दूसरी तरफ मण्डोर का द्वितीय गेट व छतरियाँ बनी हुई है। नागाद्रही के किनारे श्मशान भी था क्योंकि पुरातन समय में नदी के किनारे की दाह संस्कार किया जाता था। नागभट्ट बड़ा पराक्रमी राजा हुआ। राजपुताने में नाहड़राव परिहार का नाम प्रसिद्ध है व शायद यही नागभट्ट (नाहड़) हो क्योंकि नाहड़ नागभट्ट का ही प्राकृत रूप है।[20]

मण्डोर का प्रतिहार नाहर राव 894 वि.सं. (837 ई.) से पहले हो चुका था। यह उस वंश के अभिलेख से सिद्ध है और 12 वीं शताब्दी से बहुत पहले मण्डोवर से प्रतिहार वंश का राज्य उठा चुका था।[21]

मण्डोर से प्राप्त एक खण्डित अभिलेख से स्पष्ट होता है कि सहजपाल के समय तक मण्डोर पर चौहानों का अधिकार हो गया था। इसके उपरान्त सोनगिरा चौहान चाचिगदेव के सुंधा पहाड़ी अभिलेख वि. सं. 1319 (1262 ई.) से ज्ञात होता है कि चाचिगदेव के पिता उदयसिंह देव ने मण्डोर पर अधिकार कर लिया था।[22]

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि चौहानों ने प्रतिहारों को हराकर अपना साम्राज्य स्थापित किया जो करीब 150 वर्षों तक रहा होगा। तदुपरांत फिर सत्ता प्रतिहारों के हाथों में चली आई। तुर्कों के आक्रमण के समय मण्डोवर पर प्रतिहारों का अधिकार था उस समय नाहड़राव (नागभट्ट) व बाउक के वंशज राणा रोपड़ा का अधिकार था। सन् 1305 से 1311 ई. तक अलाउद्दीन ने मारवाड़ पर सेनाएं भेज कर सिवाना, जालौर, भीनमाल आदि छोटे-छोटे राज्य जीत लिये तथा जैसलमेर को भी लूटा।[23]

तनाहपीर दरगाह, मण्डोर पर लगे अभिलेख के अनुसार "हिजरी सन् 699 मुताबिक संवत 1349 विक्रमी में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने मण्डोर के राणा रोपड़ा से मण्डोर किला फतह किया। उस जंग में सुल्तानी सिपेसालार सय्यद हबीबुल्लाह रह साहब भी शहीद हुए जो जमानोहाल में तनाहपीर साहब के नाम से मशहूर हैं।

वि.सं. 1349 (1292 ई.) में दिल्ली के तुर्क बादशाह जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के अधिकार में अजमेर, मण्डोर और नागौर आ चुके थे। इन तुर्कों का राज्य लगभग 100 वर्षों तक मण्डोर पर रहा। दिल्ली सल्तनत कमजोर होने पर उसके सूबेदार खुद मुख्त्यार बन बैठे थे। गुजरात के सूबेदार जाफर खाँ स्वतंत्र होकर मुजफ्फरशाह बन गया व गुजरात के साथ ही अजमेर और मण्डोर पर कब्जा जमा लिया। मण्डोर पर अपनी तरफ से ऐबक खाँ नामक हाकिम नियुक्त किया।[24]

सन्दर्भ—

1. प्रो. जहूर खां मेहर—राजस्थानी संस्कृति रा चितराम—पृ. 124
2. ऋग्वेद 1, 3, 5, 6 पूर्व, पृ. 125
3. (अ) जहूर खां मेहर—राजस्थानी संस्कृति रा चितराम—पृ. 126
   (ब) वाल्मिकी रामायण, युद्ध कांड, सर्ग-22
4. डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 3
5. (अ) भागवत पुराण, श्लोक 36, अध्याय 10 खण्ड 1
   (ब) जहूर खां मेहर—राजस्थानी संस्कृति का चितराम—पृ. 127
6. डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 6
7. (अ) अमरकोश काण्ड 2, भूमि वर्ग, श्लोक-5
   (ब) डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 4
8. (अ) राजबलि पाण्डे—अशोक के धर्म लेख (बैराढ़ अभिलेख)
   (ब) डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 6
9. जयचन्द्र विद्यांलकर—संस्करण—5—भारतीय इतिहास का उन्मीलन, पृ. 175
10. वही—पृ. 199
11. वही—पृ. 201, 204, 205

12. डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 7
    ब्रजमोहन लाल वर्मा—फाहियान और ह्वेनसांग की भारत यात्रा—पृ. 17
13. नारायणसिंह भाटी—मारवाड़ रा परगनां री विगत—पृ. 1
14. डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 7
15. जयचन्द विद्यांलकर—सं. 5 भारतीय इतिहास का उन्मीलन—पृ. 226
16. डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 8
    रेऊ : मा. इ. भाग 1 पृ. 6
17. डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 8
18. डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 8-9
19. जयचन्द विद्यांलकर—सं. 5 भारतीय इतिहास का उन्मीलन—पृ. 287
20. जगदीशसिंह गहलोत—मारवाड़ राज्य का इतिहास, पृ. 45
21. जयचन्द विद्यांलकर—सं. 5 भारतीय इतिहास का उन्मीलन—पृ. 363
22. डॉ. मांगीलाल व्यास—जोधपुर का इतिहास—पृ. 11
23. जयचन्द विद्यांलकर—सं. 5 भारतीय इतिहास का उन्मीलन—पृ. सं. 388
24. जगदीशसिंह गहलोत—मारवाड़ राज्य का इतिहास, पृ. 8

तत्कालीन जातीय व्यवस्था एवं परिवर्तन

मोहम्मद-बिन-साम (गोरी) मुल्तान और सिंध जीतता है फिर 1178 ई. में गुजरात पर चढ़ाई करता है। इसमें उसकी हार होती है। उसकी सेना का बड़ा अंश कैद हो जाता है और उन कैदियों को (तारीख-ए-सोरठ) गुजराती लोग हिन्दू बनाकर अपनी जातों में मिला लेते हैं। (जयचंद्र विद्यालंकार-भारतीय इतिहास की मीमांसा 1960 प्रथम प्रकाशन पृ.सं. 97)

अल्बरूनी ने लिखा है—मैंने कई बार सुना है कि जब (युद्ध में कैद हुए) हिन्दू दास भागकर अपने देश और धर्म में वापिस जाते हैं तब हिन्दू उन्हें प्रायश्चित रूप में उपवास करने का आदेश देते हैं... फिर उन्हें गायों के गोबर, मूत्र और दूध में नियत दिनों तक दबाये रखते हैं... फिर उन्हें वही मल खिलाते हैं। मैंने ब्राह्मणों से पूछा कि क्या ये सत्य है? परन्तु वे इससे इंकार करते और कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति के लिए कोई भी प्रायश्चित सम्भव नहीं और उसे जीवन की उस स्थिति में लौट आने की कभी इजाजत नहीं दी जाती जिसमें वह बन्दी रूप में ले जाये जाने के पहले रहा हो।

अल्बरूनी ने लिखा है–उन्हें, (हिन्दुओं को) इस बात की इच्छा नहीं होती कि जो वस्तु एक बार भ्रष्ट हो गई है उसे शुद्ध कर के पुनः ग्रहण कर ले... मूर्खता ऐसा रोग है जिसकी कोई दवाई नहीं। हिन्दुओं का विश्वास है कि उसके समान कोई जाति...कोई सम्राट्...कोई धर्म...कोई विद्या नहीं...। उनके पूर्वज ऐसी संकीर्ण विचार वाले नहीं थे जैसे कि यह वर्तमान पीढ़ी है (जयचंद्र विद्यालंकार-भारतीय इतिहास की उन्मीलन—पांचवां संस्करण–पृ.सं. 353)

गुप्त युग (350 ई.) तक भी जात-पाँत का विचार परिपक्व नहीं हुआ था, लेकिन जातियों इकाइयों के रीत रस्म, सांस्कृतिक परम्पराओं आदि को सुरक्षित रखने का कार्य शती ई. पू. से छठी पश्चात् तक पूर्ण हो चुका था। चारों वर्णों में परस्पर अच्छा संबंध था। उपजातियाँ बनने लग गई थी लेकिन क्षत्रियों में अनेक उपजातियाँ नहीं थी। क्षत्रिय प्रायः एक वर्ण था।

मध्यकाल (540-1536 ई.) में इस्लाम के चरण भारतवर्ष की भूमि पर पड़े। देश के राजनैतिक क्षितिज पर ही नहीं बौद्धिक क्षेत्र पर भी एक नया अतिक्रमण हुआ। एक नई विचारधारा ने हमारे मानस को झकझोर दिया। वीरता के क्षेत्र में राजपुत्रों ने वीरता दिखलाई, परन्तु सामाजिक क्षेत्र में प्रत्येक जातीय इकाई ने नई विचारधारा से त्राण पाने अपने कुल गिन लिये। शादी ब्याह का क्षेत्र हमेशा के लिए सीमित कर लिया गया। विवाह आदि के सम्बन्ध में बने नियमों का कठोरता से पालन होने लगा। प्रदेश तथा भूपतियों के नामों के आधार पर उपजातियां बनने लगी, स्वयं इस्लाम में भी वर्गीकरण पेशे के आधार पर होने लग गया (बलदेवसिंह कच्छवाह—सैनी क्षत्रिय समाज का इतिहास पृ. सं. 5 व 6)

पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी में युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के साथ बहुत सारे सैनिकों को भी बन्दी बनाकर मोहम्मद गौरी गजनी ले गया और उनको गजनी में बन्दी बनाकर रखा। इन सभी बन्दी बनाये हुए हिन्दू सैनिकों को मुसलमान बना दिया जाता या उन्हें मौत के घाट उतार देते, शेष बचे हुए सैनिकों को गजनी में इन बन्दी सैनिकों को गुलाम बनाकर बेच दिया जाता था। भारत पर सबसे पहले मुस्लिम आक्रमण अरब के खलीफा हज्जात द्वारा राजा दाहिर पर किया या फिर मोहम्मद गौरी से 150 पूर्व मोहम्मद बिन कासिम द्वारा थानेश्वर युद्ध में बन्दी बनाये हिन्दुओं को या तो मुसलमान बना दिया (जो गौरी पठान कहलाते हैं) या कत्ल कर दिया, नहीं तो गुलाम बनाकर गजनी में बेचना चाहा। इन हिन्दुओं के साथ बहुत ही कठोर अत्याचार किया जाता था। ऐसी ही परिस्थितियाँ मोहम्मद गौरी के समय बन्दी बनाये गये सैनिकों के सामने भी थी। इन विदेशी आक्रमणकारियों ने असंख्य मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ा और लूटा, नगर और ग्रामों में लूटपाट की हजारों स्त्रियों पुरुषों का कत्ल, हजारों स्त्रियों के साथ बलात्कार व

अपहरण कर अपने साथ ले गए। (मूर्तिपूजा का आदिकाल तथा आदिकरण लेखक—राजेन्द्र, तीसरा संस्करण—पृ. सं. 127 व 129)

मुहंता नैणी ने अपनी ख्यात में ऐसे कई अवसरों का वर्णन किया है। काल में घूर्णित चक्र ने कई व्यक्तियों और जातियों को अपना नाम, धर्म और देश परिवर्तन करने को विवश किया। जबकि अनेक की संख्यां में हिन्दू मुसलमान बन गये या बना लिये गए। ब्राह्मण क्षत्रिय में और क्षत्रिय कृषि कर्म में प्रवर्त्त कृषक जाति में तथा शूद्रों में परिवर्तित हो गये। कई ब्राह्मण और क्षत्रिय वैश्य और शिल्पियों में बदल गये। अनेक जातियों के प्रादुर्भाव की बातें इस ख्यात में वर्णित है। (मुहंता नैणसी की ख्यात—भाग 4 आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया—पृ. सं. 16)

इतिहास ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा पड़ा है किस प्रकार जातियां व्यवस्था के कठोर नियमों से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इस्लामी बर्बरता के आगे झुक गये और उनके हाथ मजबूत किए। धर्मांतरण स्वीकार नहीं करने वालों ने अपमानित होना स्वीकार किया लेकिन विधर्मी होना स्वीकार नहीं किया। ऐसी ही परिस्थितियाँ मोहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान के युद्ध उपरांत कैद किए गए राजपूत सैनिकों के सामने उत्पन्न हुई।

इस व्यवस्था से छुटकारा पाने के लिए बन्दी बनाये गये ये सैनिक न तो मुस्लिम बनना चाहते थे न ही गुलाम बनकर बिकना। कुछ सैनिकों ने सोचा कि क्यों न हम ऐसा कुछ तरीका अपनाएँ ताकि इस नारकीय जिंदगी से छुटकारा भी मिले और धर्म परिवर्तन भी न हो और वापस जाकर अपने राज्य व परिवार की रक्षा भी कर सकें। कुछ सैनिकों द्वारा सोची हुई युक्ति के अनुसार वहां के बगीचे के बागवान से सहायता लेने का निश्चय किया। इन सैनिकों को कठोर सामाजिक व्यवस्था व जातीय व्यवस्था की जानकारी होते हुए भी यह निर्णय उनके लिए घातक हो सकता है, अपने धर्म और कुल की रक्षा के लिए यह कदम उठाने को मजबूर हुए। उन्होंने बगीचे में काम करने वाले बागवान खेता माहुर को बुलाकर कुछ बन्दी सैनिकों ने अपनी जाति का बताकर छुड़ाने का आग्रह किया। कुछ महीनों में आपसी समझौते के बाद बागवान खेता माहुर द्वारा सम्राट गौरी से सिफारिश कर इन

सैनिकों को अपनी जाति माली का बताकर छुड़वाया। ये माली मारवाड़ में "राजपूत माली" जाति के रूप में आकर बसे। इनमें राव ईसरदास गहलोत भी शामिल थे, जो बाद में पुनः कुचेरा आकर बसे। गजनी से छूटे इन राजपूतों को राजपूत समाज द्वारा बहिष्कृत करने के बाद उन्होंने एक अलग समाज बनाने का निर्णय लिया। (12 जनवरी 1201, शनिवार) वि. सं. 1257 मास सुदी 7 के दिन पुष्कर में महादेव पुत्र कुसमा चौहान की अध्यक्षता में एकत्रित होकर समाज के लिए अलग से 22 नियम बनाए जिसमें शराब, मांस नहीं पीने खाने व जीव हत्या नहीं करने की कसम ली, के साथ नये प्रगतिशील समाज की शुरुआत की।

"इस तरह जब ये लोग परेशानी और जान जोखिम से छूटकर शहरों और कस्बों में आबाद हो गए और उनको इस नई कौम की हालत और हैसियत में तीन-चार वर्ष रहने के पश्चात् जो अनुभव हुआ उसे उन्होंने अपनी अगली-पिछली हालत पर गौर करके आइंदे के वास्ते एक मरजाद बांधने की जरूरत देखी, क्योंकि अब जिस कौम में उनको और उनकी औलाद को उम्र तय करनी पड़ी थी उसके रीत-रिवाज में कई ऐसी खराब बातें भी थी जिनको उनकी तबियत जिसमें राजपूती खून मिला हुआ था बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। इसलिए पुष्करजी में ये लोग जमा हुए और अजमेरी चौहान कुसमा के बेटे महादेव को सभापति बनाकर माघ सुदि 7, संवत् 1257 (ईस्वी सन् 1201, तारीख 12 जनवरी, शनिवार) ने अपनी बिरादरी के वास्ते लिखत लिख कर अपने ब्रह्मभट्ट को सौंप दिया।" (सत्येन्द्रसिंह गहलोत, सैनिक क्षत्रिय ऑफ जोधपुर, पृ. 15) ❑

गहलोत वंश

यह वंश अयोध्या के सूर्यवंशी राजा रामचन्द्र के पुत्र लव के वशंज माने जाते हैं। इन्हीं वंशजों में प्रतापी राजाओं में शिलादित्य जो हर्षवर्धन के समय मध्यपूर्वी क्षेत्र के प्रतापी राजाओं में से एक थे। जिनका वर्णन चीनी यात्री ह्वेनसांग (629-647 ई.) ने किया। महाराजा शिलादित्य ने ह्वेनसांग की उपस्थिति में धर्म महासभा का आयोजन किया था। बप्पा रावल (713-810 ई.) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा माने जाते हैं, इसी राजवंश को सिसोदिया भी कहा जाता है। बप्पा रावल का जन्म 712 ई. में ईडर (गुजरात) में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेन्द्र द्वितीय थे। बप्पा रावल ने मौर्य वंश के राजा मान मौर्य को हरा इस दुर्ग को हस्तगत किया था। गुर्जर प्रतिहार सम्राट नागभट्ट प्रथम और बप्पा रावल ने अरबों के आक्रमण से बचाये रखा। बप्पा रावल का देहांत नागदा उदयपुर में हुआ, जहां इनकी समाधी स्थित है। गहलोत वंश में कई शक्तिशाली शासक हुए। सिसोदा गांव में रहने के कारण सिसोदिया गहलोत कहलाए। आगे चलकर गहलोत अलग-अलग खापों (शाखाएँ) में परिवर्तित हो गए जिनमें मुख्यतः—

1. सिसोदिया 2. गहलोत 3. आहड़ 4. मांगलिया 5. पीपाड़ा 6. केलवा 7. गोहर 8. घोरणीया 9. गोदारा 10. भीमला 11. केकोटक 12. सोर 13. बुहड़ 14. रूसेवा 15. निरपुरा 16. नागोड़ा 17. नाघोता 18. भोजकरा 19. कुचेरा 20. दसोता आदि-आदि।

इन उपरोक्त गहलोत खापों में कुचेरा व पीपाड़ा नख के राव ईसरदास व जालणसी मोहम्मद गौरी के कैद से बागवान बताकर छूटे थे। विवरण इस प्रकार है—

नम्बर	खाप	नख	नाम मारिस आला जो राजपूत से माली हुआ	नाम उनके बाप का
42	गहलोत	कुचेरा	ईसर	आल्हाराव
43	गहलोत	पीपाड़ा	जालणसी	रावत जैसिंघदे

(रिपोर्ट मरदुमशुमारी राज मारवाड़, 1891, पृ. सं.-89)।

राजपूत माली चार पट्टी यानी चार अलग-अलग स्थानों पर बस गये। जिसमें सुवालख यानी नागौर पट्टी दूसरी—मेवाड़, तीसरी—पचवारी और चौथी—ढूंढाड़।

राव बही के अनुसार जालणसी ने चित्तौड़गढ़ छोड़ी और गांव पीपाड़ में आकर बसे और कुलदेवी भैसाज माता की पूजा कर देवी की थापना ग्रांम खेजड़ला में की।

भैरव काले गोरे दोनु पुजै।
भैसाज माता री पूजा करे।

संवत् 1257 (1201 ई.) में पुष्कर लिखत में सम्मिलित होने के बाद नागौर सुवालक खेड़ा से पालासणी ग्राम में चैनार आकर बसे।

गीत—

पालासाणी तखत ने पिपाडो जगकीनो।
भलो दामावतो मंडप छायो।

कुचेरिया गहलोत—

काजल राव ने चित्तौड़ छोड़कर कुचेरा में काला-गौरा भैरव की स्थापना कर यहीं बस गये। इन्हीं के वंश में राव ईसरदास जो मोहम्मद गौरी के कैद से छूट कर आये थे। इसलिये यहां के गहलोत कुचेरिया गहलोत कहलाते हैं।

गहलातों के कुलदेवता—

गहलोत वंश के कुलदेवता श्री एकलिंग जी महादेव जी हैं, इनकी घोर तपस्या से ही बप्पा रावल को चित्तौड़ का राज्य मिला। एकलिंगजी महादेव का भव्य मंदिर उदयपुर में कैलाशपुरी चित्रकूट पर्वत पर स्थित है।

कुलदेवी—

गहलोतों की कुलदेवी रायक माता (बाणमाता व ब्राह्मणी माता भी कहा जाता है) का मूल स्थान चित्तौड़ है। वहां से काजलसेन द्वारा भैरव व बाणमाता की स्थापना कुचेरा में की व हेमा राव ने कुचेरा से बाणमाता व भैरव की स्थापना मण्डोर में वि. सं. 1446 चैत्रवदी एकम (12 मार्च 1389, सोमवार) को की। ❑

गहलोतों की मण्डोर में उपस्थिति व राठौड़ों से सम्बन्ध

गुजरात के सूबेदार जाफर खाँ स्वतंत्र होकर मुजफ्फरशाह बन मण्डोर पर अपना सामंत ऐबक खाँ को नियुक्त कर दिया। उस समय मण्डोर छोटी-छोटी जागीरों में विभक्त हो चुका था और अलग-अलग जागीरों के कई सामंत स्वतंत्र होकर अपना हुकुम चलाने लग गये थे। वे सभी सामन्त आपसी झगड़े में लिप्त रहते थे। ज्यादातर झगड़े गाय, घोड़े, कीमती-सामान व भूमि पर अधिकार कर सत्ता को विस्तृत करने के लिये होते थे। उदाहरणात— राव वीरम जी जो राव सलखाजी के तीसरे पुत्र और राव मल्लीनाथ जी के छोटे भाई थे, जोया को मार कर उसकी भूमि पर अधिकार करना चाहता था। राव वीरम का परधान दोलीया जोये आगे, आय वीरम की गाय लीवी। बीजौ साथ थोडौ कर वांसे रहौ। वीरम आपडीयाँ (पकड़ा) तढै बेट (युद्ध) हुई इतने साथ राठोडा रौ काम आयौ—1. राठौड़ वीरम सलषावत (सलखावत) 2. गेहलोत दौलीयौ गेहन रौ 3 माणक हरीयो गेहलोत। (डॉ. नारायण सिंह भाटी रा परगंना री विगत, पृ. सं.-20, 26)

राव चूंडा की भाटियों से आपस में दुश्मनी थी। राव केलण मुलतान जाकर सलेमखान को लाया और राव चूंडा जी पर रात के समय हमला किया। जिसमें राव चूंडा जी की नागौर में मृत्यु हुई उनके साथ पूना दोलीया रो गहलोत की भी मृत्यु हुई। यह वही दोलीया गहलोत राव वीरम जी का प्रधान था। यहाँ यह प्रमाणित होता है कि राव गहलोत के पूर्वज कुचेरा से

मण्डोर की तरफ आ चुके थे और उनका राठौड़ परिवार से घनिष्ठ सम्बन्ध थे। राव बहियों के अनुसार गहलोतों का कुचेरा से मण्डोर आगमन वि. सं. 1375 (1318 ई.) बताया गया है।

यहाँ हम यह भी अनुमान कर सकते हैं कि राव चूंडा जी वह राव हेमा गहलोत हम उम्र रहे होंगे। राव चूंडा जी का लालन-पोषण धाय के द्वारा हुआ था।

"ताहरां चूडैजी री मां कहयो—म्हारै धणी सेती कामं छै, आंतरो हुवै छै, हूं सती हुईस। ताहरां चूंडो जी धाय नू दियो। चूडै जी ने धाय लै अर आल्है चारण रै घरै कालाऊ गांव जायनै रही। उठै चूडैजी नू धाय पालै। (मुंहता नैणसी री ख्यात—आचार्य बद्री प्रसाद साकरिया, पृ. सं.-303-304)।

अतः इन गहलोत परिवारों का राठौड़ों के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध रहे थे। एक कारण यह भी रहा होगा ही राव हेमा गहलोत को भी ईंदा परिहारों ने प्रधान बनाया हो और यह लोग कुचेरा छोड़कर मण्डोर की तरफ आए। ❑

राव हेमा गहलोत का मण्डोर आगमन

राव हेमा गहलोत का जन्म कुचेरा में राव पदम जी गहलोत के यहां हुआ। राव पदम जी के पूर्वजों में राव ईसरदास जो राव काजल सेन, जिन्होंने चित्तौड़ छोड़ कुचेरा बसाया, के वंशज थे। काजल सेन सिसोदिया वंश के राजपूत जो बप्पा रावल (ई. 712) के वंशज थे। अतः राव ईसरदास बप्पा रावल वंश के सिसोदिया राजपूत हुए। हेमा गहलोत के माता का नाम गंवरी पुत्री प्रेमसी सोलंकी व पत्नी का नाम पार्वती पुत्री रामौजी देवड़ा था।

एक दिन माता गंवरी अपने खेत में कृषि कार्य कर रही थी उसी समय कुचेरा के ठाकुर राणा जयसिंह अपने आदमियों के साथ शिकार खेलने हेतु निकले हुए थे। राणाजी के आदमियों द्वारा गोपण (विशेष प्रकार का चमड़े से बना लम्बा रस्सीनुमा जिसमें रबड़ में कंकर को फंसाकर फेंका जाता है) से खरगोश पर गोली चलायी परन्तु घायल खरगोश दौड़ता हुआ राव हेमा गहलोत के माता गंवरी जो अपने खेत में कृषि कार्य कर रही थी, उनकी गोद में चला गया। गंवरी ने उसे अपनी गोद में छुपा लिया। राणा जयसिंह और उनके आदमियों ने खरगोश की मांग की परन्तु गंवरी ने देने से मना कर दिया, कहा मेरी गोद में आए घायल जीव की मैं हत्या नहीं होने दूंगी, न ही मैं आपको दूंगी, यह मेरी शरण में आया हुआ है, इसलिए इसे बचाना मेरा धर्म है। आप कोई दूसरा शिकार कर लें, परन्तु राणा जयसिंह और उनके आदमियों ने अपनी बेज्जती समझते हुए उन्होंने जबरदस्ती छीनने की कोशिश की परन्तु क्षत्राणी गंवारी ने विरोध किया। दोनों में आपसी झड़प

के कारण लड़ाई बढ़ने लगी। ठाकुर के आदमियों द्वारा माता के साथ झगड़े को देख राव हेमा गहलोत का खून खोल उठा व आपस में तलवारें खींच गई लड़ाई इतनी बढ़ गई थी, कोई पीछे हटने को तैयार नहीं था। इस लड़ाई में कई लोग घायल हुए। राणा जयसिंह जी भी सिसोदिया वंश के राणा थे, राव हेमा गहलोत भी इसी वंश के थे। राव हेमा गहलोत के पूर्वजों ने करीब 200 वर्ष पूर्व अपना कर्म छोड़ा था क्षत्रिय धर्म नहीं। शरण में आये घायल खरगोश की रक्षा की व साहसी राव हेमा गहलोत अपनी आन-बान-शान की रक्षा व माता के साथ हुए अभद्र व्यवहार के कारण साहस और वीरता के साथ ठाकुर जयसिंह के साथ लड़ाई लड़ी। उनकी साहस और वीरता की चर्चा चारों तरफ फैल गयी कि एक साहसी वीर ने अपनी माता के अभद्रता का बदला लिया। जब इस वीरता का पता बालेसर के ईंदा परिहार राजपूत राजाओं को चला तो उन्होंने अपने पास बुलाकर राव हेमा गहलोत को मण्डोर का प्रधान बना दिया। प्रधान बनाने के मुख्य कारण उनकी वीरता पराक्रम व साहस तो था ही इसके अलावा ईंदा परिहारों द्वारा अपनी खोई हुई ताकत को बढ़ाना भी था, क्योंकि मण्डोर पर दिल्ली के बादशाह जलालुदीन फिरोज खिलजी ने वि.सं. 1349 में परिहार राजा रोपड़ा को पराजित कर मण्डोर अपने अधीन कर लिया था।

प्रधान नियुक्ति के बाद अपने काका राव खेखो, राव जाजो, राव नरसिंह, राव मोहण, राव तीर्थों, पुत्र राव थीरपाल व अन्य परिवार के सदस्यों को दलबल सहित अपनी कुलदेवी बाण माता व इष्ट देव काला गोरा भैरूजी की मूर्ति को छाबड़ी में डाल बैल गाड़ी में रख कुचेरा से रवाना हुए। मण्डोर में वि. सं. 1446 चैत्र कृष्ण एकम (12 मार्च 1389, सोमवार) को मूर्ति थापित कर चांदणी की नवमी की पूजा की। ❑

मण्डोर फतह में राव हेमा गहलोत की भूमिका

ईंदा परिहारों की शक्ति क्षीण हो चुकी थी। मण्डोर के चारों ओर तुर्कों का राज्य था। गुजरात, नागौर भी इन शक्तिशाली तुर्कों के अधीन था। इन तुर्कों द्वारा अधिक लगान व कर लेने से आम आदमी की जिंदगी दयनीय हो गयी थी। ईंदा परिहार बालेसर तक ही सीमित हो चुके थे। उधर मेवाड़ के राणा व जैसलमेर के भाटी इतने शक्तिशाली नहीं थे कि इन तुर्कों को हटा सके। मण्डोर पर अपना वर्चस्व स्थापित करने की होड़ ने सभी की आर्थिक स्थिति को नाजुक बना दिया था। तुर्कों के अत्याचारों से आम जनजीवन की स्थिति बहुत दयनीय थी। इस समय ऐसे योद्धाओं की जरूरत थी जो इन तुर्कों से लोहा ले सके।

हेमा गहलोत के मण्डोर आगमन के कुछ वर्ष पश्चात् दिल्ली में सल्तनत कमजोर होने से गुजरात के सूबेदार जाफर खां ने मण्डोर और नागौर का मुख्यत्यार बन बैठा और मण्डोर पर ऐबक खां को अपना हाकिम नियुक्त किया। ऐबक के हाकिम बनने के बाद वह कृषकों को ज्यादा लगान देने के लिए परेशान करने लगा, जिससे कृषक बर्बाद हो चुके थे। ईंदा परिहारों व मण्डोर के आस पास के जमीदारों में इतनी शक्ति नहीं थी कि वह इन तुर्कों से मुकाबला कर सके। ऐबक ने मण्डोर के भोमियों-जागीरदारों से साधारण कर के अलावा अपने घोड़ों के लिए घास की 100 बैल गाड़ियों की मांग की परन्तु इन लोगों ने तुर्क ऐबक को अतिरिक्त लगान देने से मना कर दिया। कृषकों ने लगान अपने ईंदा परिहारों से लेने को कहा, ऐबक ने इस शर्त को नहीं माना और 100 गाड़ियों घास के लिए दबाव बनाता

रहा। बढ़ती हुई परेशानी को देखते राव हेमा गहलोत की प्रधानी में ईंदा शाखा के मुखिया उगमसी ने एक युक्ति सोची। ऐसे तो ये परेशान करेगा क्यों ना इस पर योजना बनाकर आक्रमण कर इन तुर्कों को यहां से हमेशा हमेशा के लिए भगाकर मण्डोर पर पुनः कब्जा किया जाए।

योजना अनुसार उन्होंने गांवों से 500 जंगी जवानों को एक-एक बैल गाड़ी में चार-चार जवानों को हथियार सहित घास के बोरों में छुपा दिया और बैल गाड़ी हांकने वाले जवान को भी फूल पत्तों से ढके हथियार के साथ 100 गाड़ियों में 500 जवानों को मण्डोर किले के दरवाजे पर खड़ी कर दी। हाकिम ऐबक से कहा मुजरा लायक घास लेकर आए हैं, आपकी नजर पेश है। ऐबक के भांजे ने शरारत से एक भाला घास में मारा जो एक योद्धा की जांघ में लगा उसने बड़ी चतुराई से खून पोंछ कर भाले को बाहर जाने दिया। भाले के देर से व कठिनाई से निकलने में गाड़ियों को घास से खूब भरी समझ हाकिम का भानजा उन्हें अन्दर ले गया जहां गाड़ियों के खुलते ही 500 सैनिकों ने घास में से निकल कर जोशीले नारे **''आयो लड़णो फतह कर दो''** के साथ धावा बोल दिया और ऐबक के सैनिकों पर टूट पड़े। मण्डोर के पूरे किले में घूम घूम कर कत्लेआम किया ऐबक और उनके साथियों को मार मण्डोर किले को पुनः अपने अधीन कर लिया। मण्डोर से तुर्कों का सफाया कर विदेशी दासता से मुक्त करवाया।

राव हेमा गहलोत के साहस, शौर्य व पराक्रम से पुनः ईंदा परिहारों का राज्य स्थापित हुआ, परन्तु ईंदा परिहारों के पास इतनी शक्ति नहीं थी कि पुनः प्राप्त सत्ता को संभाल सके, क्योंकि नागौर पर अभी भी शक्तिशाली तुर्कों की सत्ता कायम थी। उधर चित्तौड़ के राणा भी मण्डोर की सत्ता हथियाने के फिराक में थे पर ईंदा परिहारों ने विचार किया कि तुर्कों से सत्ता बचाना नामुमकिन है, क्यों न शक्तिशाली हो रहे राठौड़ों को मण्डोर का राज्य राव चूंडाजी को सौंप दे। ईंदा परिहार व राव चूंडा जी के मध्यस्था करते हुए प्रधान राव हेमा गहलोत ने बुद्धिमता, रणकौशल व दूरदर्शिता का परिचय देते हुए राव चूंडा जी को मण्डोर का राज दिलाने में सहयोग किया ताकि तुर्कों के हमलों से बचाया जा सके।

''इस कारण उगमसी ने अपने प्रधानमंत्री गहलोत हेमा की सलाह से राव मल्लीनाथ जी राठौड़ के शक्तिशाली भतीजे चूंडा से अपने पुत्र राव धवल की कन्या का विवाह कर उसको दहेज में मण्डोवर दे डाला उस समय का यह दोहा प्रसिद्ध—

इन्दा रो उपकार, कमधज कदे न बीसरे।
चूंडा चेंवरी चाढ़, दियो मण्डोवर दायजे॥

इन्दों को कमधज (कन्नौजिये राठौड़) कभी न भूलेंगे क्यों कि इंदो न चूंडा जी राठौड़ को अपनी पुत्री ब्याह कर मण्डोर दहेज में दिया था। (जगदीश सिंह गहलोत—मारवाड़ राज्य का इतिहास पृ. सं.-82, डॉ. मांगीलाल व्यास 'मयंक', जोधपुर राज्य का इतिहास, पृ. 19)।

''जोधपुर में गहलोत माली जियादा है ये अपनी पीढ़ियां कुचेरे के गहलोत राव ईसरदास से मिलते हैं। जो तुर्कों के डर से मुसलमान हो गया था। उसकी औलाद में से हेमा माली जो बालेसर के ईंदों का परधान था राव चूंडाजी को मंडोर का राज दिलाने की कोशिश में शामिल था उसको रावजी ने मंडोर में अमल हो जाने पर अपने इकरार के माफिक जो पौष वदि 10 संवत् 1449 (08 दिसम्बर 1392, बुधवार) को थाने सालोड़ी में किया गया था, मंडोर के पास बहुत सी जमीन माफी दी थी। जिसके ऊपर राव रिडमल जी के पीछे जब कि राणा कुंभा जी का मंडोर में कब्जा हो गया था। उनके हाकिम अहडा हिंगोला ने कई लागें लगा दी।'' (रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़–1891, पृ. 90)

''हेमा जी इस विशुद्ध क्षत्रिय जाति के साधारण जमींदार थे जो युद्ध आदि कारणों से खेतीबाड़ी का पेशा करने लग गये। आगे चलकर लोग एक भिन्न जाति समझने लगे और राजपूत माली जाति के नाम से पुकारने लग गये। (जगदीश सिंह गहलोत—मारवाड़ का इतिहास, पृ. सं.-82)। ❑

राव हेमा गहलोत द्वारा राव चूंडा को तिलक करना

राव भाटों की उपलब्धि बहियों के अनुसार राव हेमा गहलोत ने राव चूंडा जी को राज तिलक किया और राव चूंडा जी ने अपने इकरार के माफिक जो पौष वदि 10 संवत 1449 (08 दिसम्बर 1392, बुधवार) में हुआ राव हेमा गहलोत को मण्डोर से सालोड़ी गांव तक कृषि भूमि माफी दी थी। राव हेमा गहलोत ने अपने जीवन काल में वीरता, शौर्य, पराक्रम, रणकौशल का परिचय देते हुए तुर्कों से मण्डोर को आजाद करवाया। उस समय के भट्ट भोजराज के अनुसार ''माली हेमा राव गहलोत कुचेरा उड़ा जीमाय ने आपरी जमीन रो सीलो लिखत—मण्डोर आवास रो नाम मंडाय ने—5 घोड़ा जोत रथ—15 सेर तांबा रो तांबा पत्र राव जी ने दीनो—मण्डोर के खेड़े राव चुंडा के वारे—(ख्यात देवराज राव, सोजत)

भाट/रावों की बहियों के अनुसार—

हेमे घौडा जोत घुडवेल दान दीनी गढ़ मडोवर रे षेड़े तुरकाणी सु हिन्दवाणी कीया गढ पालट कीया मंडोवर रे षेड़े राव चांडा ने तिलक दीन्हीं राव चांडा रे वारे (ख्यात राव शंकर लाल, बीकानेर)

''हेमै तुरकाणी तोड़ हिन्दवाणी करी राव चूंडाजी ने तीलक दीन्हों हेमजी घोड़ा जोत गुडवेल दान दीना गढ़ मडोवर के षेड़े राव चूंडा जी के वारे'' (ख्यात राजेन्द्र सिंह राव, बाड़मेर)

''हेमे तुरकाण तौड़ हिन्दवाण कीया गढ़ पालट कीया राव चूंडा या चंडा नै तीलक दीयौ घोड़ा जोत गुडबैल दान दीन्ही गढ मडोवर के षेड़े राव चंडा के वारे'' (ख्यात देवराज जी भट्ट कमला भट, सोजत)

''हेम तुरकोण तोड़ हिन्दवाण कीन्हा गढ़ पालट कीन्हा राव चांडा न तीलक दीन्हो हेमे घेडो जोत घुडबल दान दीन्हीं गढ मडोवर के षेड़े राव चांडा के वार'' (ख्यात राव धनराज, बालेसर)

''हेम पदम कै घोड़ा जौत नै घुडैहल दान दीन्हो तुरकाणी सु हिन्दवाणी कीन्ही गढ पालट राव चूंडा ने तीलक दीन्हों षेड़े गढ मडोवर कै'' (ख्यात श्री मुरलीधर राव, मथानिया)

हेमै तुरकाणी तोड़ हिन्दवाणी कीवीं राव चांडा नै तीलक दीन्हो हेमै घोड़ा जोत गुडबैल दान दीनी मंडोवर रे षेड़े राव चांडा के वारै (ख्यात श्री मुरलीधर राव, मथानिया)

हेमा घोड़ा जोत गुडबैल दान दीनो तुरकाणी तोड़ हिन्दवाणी राव नै तीलक दी न गढ़ पलट किन्हा गढ़ मंडोर के खेड़े राव चूंडा के वार (ख्यात राव सोहन लाल, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर)

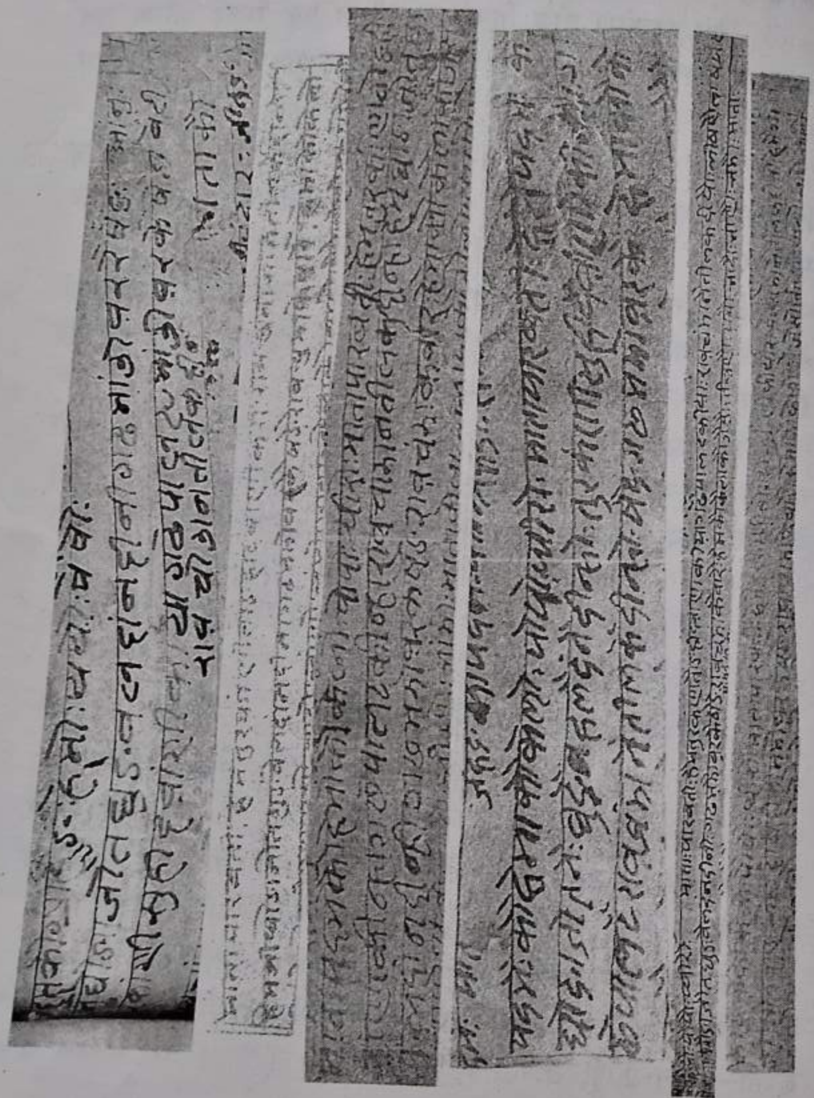
('ष' को 'ख' पढ़ें)

मुहता नैणसी के अनुसार राव चुड़ा जी का दूसरी बार पट्टाभिषेक शकुनी लोगों द्वारा किया गया।

मालै जी सुणियों-चंवडै मडोवर लियो तहंरा मालोजी साथ कर चंवडैजी कनै आया चूंडोजी सूं मिलिया। कह्यो साबास सपूत! तहंरा भगतरी तयारी हुई। मालोजी बोलिया—लोक घणो छै इयांनू नियारा बैटावों। आपै भेला जीमस्यां। **तहरां सवणीए बियो पट्टाभिषेक कियो। राव चंवडोजी कंहाणो।**

तब शकुनी लोगों ने चुंडा जी का दूसरा पट्टाभिषेक किया व चूंडा जी राव कहलाये। (बद्री प्रसाद साकरिया—मुहता नैणसी री ख्यात—भाग-2 पृ. सं.-308, 309)।

राव ख्यातों द्वारा ली गई हस्तलिखित पाण्डुलिपि



अतः यह प्रमाणित होता है कि प्रथम राज्याभिषेक (राजतिलक) राव हेमा गहलोत द्वारा हुआ होगा। बाद में शकुनी लोगों द्वारा दूसरा पट्टाभिषेक किया गया।

इन बहियों में यह बात स्पष्ट होती है कि वीर राव हेमा गेहलोत ने ईंदा परिहार राजपूतों के प्रधान रहते हुए मण्डोर से तुर्कों को भगाने में, राव चूंडा जी को मण्डोर में राज दिलाने में सहयोग किया व राव हेमा गहलोत ने राव चूंडा जी का राजतिलक किया।

"हेमा माली जो बालेसर के ईंदों का परधान था राव चूंडा जी को मण्डोर का राज दिलाने की कोशिश में शामिल था उसको राव जी ने मण्डोर में अमल हो जाने पर अपने इकरार के माफिक जो पौष वदी 10 संवत् 1449 (08 दिसम्बर 1392, बुधवार) को थाना सालोड़ी में किया गया था। मण्डोर के पास बहुत जी जमीन माफी दी थी जिसके ऊपर राव रिड़मल जी के पीछे जब कि राणा कुम्भां जी का मण्डोर में कब्जा हो गया था उसके हाकिम आहड़ा हिंगोला ने कई लागें लगा दी।" (रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़–1891, पृ. 90) ❑

भैरवनाथ

भैरव शब्द का अर्थ—भयानक, भीषण, डरवाना होता है। भैरव को शिव द्वारा उत्पन्न या शिव पुत्र माना जाता है। शास्त्रों में भगवान शिव के दो स्वरूप बताए गए हैं, एक स्वरूप में महादेव अपने भक्तों को अभय देने वाले विश्वेश्वर स्वरूप हैं और दूसरे स्वरूप में भगवान शिव दुष्टों को दण्ड देने वाले काल भैरव स्वरूप में विद्यमान हैं। शिवजी का विश्वेश्वर स्वरूप अत्यंत ही सौम्य और शांत है। यह भक्तों को सुख, शांति और समृद्धि प्रदान करता है। वहीं भैरव स्वरूप रौद्र रूप वाले हैं। इनका रूप भयानक एवं विकराल होता है। भगवान शिव के आठ विभिन्न रूपों में भैरव एक है। इनके नाम बटुक भैरव, क्रोध भैरव, दंडपाणि भूत भैरव, काल भैरव, चंद्र भैरव, आशितांग भैरव व आनंद भैरव। भैरव शिव का प्रमुख योद्धा है। भैरव के आठ स्वरूप में काला (काल भैरव) एवं गौरा भैरव (बटुक भैरव) अधिक प्रसिद्ध है।

भगवान भैरव की महिमा अनेक शास्त्रों में मिलती है। भैरव शिव के गण के रूप में जाने जाते हैं। गहलोतों के इष्ट देव श्री एकलिंगजी (शिव) हैं और भैरव शिव के गण के रूप में माने जाते हैं। भगवान भैरव की महिमा अनेक शास्त्रों में मिलती है। वहीं वे दुर्गा के अनुचारी माने गये हैं। भैरव की सवारी कुत्ता है। चमेली के फूल प्रिय होने के कारण उपासना में इनका महल विशेष महत्त्व है। रूद्र माला से सुशोभित जिनकी आँखों में आग की लपटें निकलती हैं। जिनके हाथ में कपाल है जो अति उग्र है। देश भर में भैरव तीर्थों में काशी के कालभैरव की महत्ता अक्षुण है, व प्रथम स्थान पर परिगणित है। इन्हें काशी तीर्थ का क्षेत्रपाल कहा जाता है। इनकी प्रसिद्धि सम्पूर्ण जम्बू द्वीप में है। भैरव पूजन व साधना आराधना का यह स्थल जाग्रत है। इनकी पूजा करने वाले भक्तों को किसी भी प्रकार डर परेशान नहीं करता है। कलियुग में काल से बचने के लिए काल भैरव की आराधना सबसे अच्छा उपाय है। शिव का रूप होने से पूजा करने वाले व्यक्ति को किसी प्रकार का डर नहीं सता सकता है।

तंत्राचारियों का मानना है कि वेदों में जिस परम पुरुष का चित्रण रूद्र में हुआ, वह तंत्र शास्त्र के ग्रंथोंमें उस स्वरूप का वर्णन 'भैरव' के नाम से किया गया, जिसके भय से सूर्य एवं अग्नि तपते हैं। इन्द्र-वायु और मृत्यु देता अपने-अपने कामों में तत्पर हैं, वे परम शक्तिमान 'भैरव' ही है। भगवान शंकर के अवतारों में भैरव का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है।

तांत्रिक पद्धति में भैरव शब्द की निरूक्ति उनका विराट रूप प्रतिबिम्बित करती है। वामकेश्वर तंत्र की योगिनीहृदीपिका टीका में अमृतानंद नाथ कहते हैं—'विश्वस्य भरणाद् रमणाद् सृष्टि-स्थिति-संहारकारी परशिवों भैरवः।'

भ—से विश्व का भरण, **र**—से रमश, **व**—से वमन अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाले शिव ही भैरव हैं। तंत्रालोक की विवेक-टीका में भगवान शंकर के भैरव रूप को ही सृष्टि का संचालक बताया गया है।

श्री तत्वनिधि नाम तंत्र-मंत्र में भैरव शब्द के तीन अक्षरों के ध्यान के उनके त्रिगुणात्मक स्वरूप को सुस्पष्ट परिचय मिलता है, क्योंकि ये तीनों शक्तियां उनमें समाविष्ट हैं—

'भ' अक्षरवाली जो भैरव मूर्ति है वह श्यामला है, भद्रासन पर विराजमान है तथा उदय कलिक सूर्य के समान सिंदूरवर्णी उसकी कांति है। वह एक मुखी विग्रह अपने चारों हाथों में धनुष, बाण वर अभय धारण किए हुए है।

'र' अक्षरवाली भैरव मूर्ति श्याम वर्ण है। उनके वस्त्र लाल है। सिंह

पर आरूढ़ वह पंचमुखी देवी अपने आठ हाथों में खड्ग, खेट (मूसल), अंकुश, गदा, पाश, शूल, वर तथा अभय धारण किए हुए है।

'व' अक्षरवाली भैरवी शक्ति के आभूषण और नरवरफाटक के समान श्वेत हैं। वह देवी समस्त लोकों का एकमात्र आश्रय है। विकसित कमल पुष्प उसका आसन है। वे चारों हाथों में क्रमशः दो कमल वर एवं अभय धारण करती हैं।

स्कंदपुराण के काशी—खंड के 31 वें अध्याय में उनके प्राकट्य की कथा है। गर्व से उन्मत ब्रह्माजी के पांचवें मस्तक को अपने बाएं हाथ में नखाग्र से काट देने पर जब भैरव ब्रह्म हत्या के भागी हो गए, तबसे भगवान शिव की प्रिय पुरी 'काशी' में आकर दोष मुक्त हुए। जिनमें प्रमुखतः काला एवं गोरा भैरव अति प्रसिद्ध है।

अतः गहलोतों ने भैरव की विशेष आस्था है तभी तो काजलसेन ने चित्तौड़ से काला गोरा भैरव कुलदेवी बाण माता (रायक माता) को अपने साथ कुचेरा लाकर स्थापित किया और वहीं पर बस गये। इस तरह राव हेमा गहलोत ईष्ट होने के कारण कुचेरा गौरा भैरव व बाणमाता (रायक माता/ब्राह्मणी माता) को साथ लाकर मण्डोर में स्थापित किया था। ❑

राव हेमा गहलोत द्वारा मण्डोर में स्थापित गोरा भैरव



राव हेमा गहलोत द्वारा मण्डोर में स्थापित काला भैरव



वि.सं. 1776 (1719 ईस्वी) तत्कालीन महाराजा अजीतसिंह द्वारा मण्डोर भैरव मन्दिर का जीर्णोद्धार कर गणेशजी की मूर्ति के साथ काला-गोरा भैरव की मूर्तियों का स्थान परिवर्तन कर स्थापित की



मण्डोर भैरवनाथ जोधपुर

राव हेमा गहलोत कुचेरा छोड़ते समय अपने काका राव खेखो, राव जोजो, राव नृसिंह, राव मोहण व पुत्र राव केला, राव पोपो, राव थीरपाल व अन्य परिवार के सदस्यों के दलबल सहित अपनी कुलदेवी बाण माता (रायक माता/ब्राह्मणी माता) व इष्ट देव काला गोरा भैरव जी की मूर्ति को छाबड़ी में रखकर कुचेरा से बैल गाड़ी द्वारा रवाना हुए। **मण्डोर में वि. सं. 1446 चैत्र कृष्ण एकम (12 मार्च 1389, सोमवार) को मूर्ति थापित कर चांदणी की नवमी की पूजा की।** राव हेमा गहलोत ने यहीं मण्डोर को अपना निवास स्थान बनाया। राव चूंडा जी के मण्डोर अधिकार में आने के बाद राव हेमा गहलोत को मण्डोर से सालोड़ी तक की कृषि भूमि माफी दी थी। उसके बाद राव हेमा गेहलोत व उसके परिवारों द्वारा खेतीबाड़ी हेतु मण्डोर में भैरू बेरा खुदवाया जो आजकल भैरू बावड़ी के नाम से जाना जाता है। (महाराजा अजीत सिंह ने संवत् 1776 जीर्णोद्धार कर बावड़ी का रूप दिया गया) उसी वर्ष से प्रतिवर्ष भाद्रपद व पौष की अमावस्या को सैनिक क्षत्रिय समाज के द्वारा भैरूजी व बाण माता को फूलों से शृंगार किया जाता है। इन दोनों दिनों जोधपुर में फूलों की बिक्री नहीं होती है। इसी क्रम में स्थापना के दिन राव हेमा गहलोत की प्रधानी में चैत्र कृष्ण एकम संवत् 1449 (09 मार्च 1392, मंगलवार) को विजयी जुलूस निकाला जो रावजी गैर के रूप में प्रसिद्ध हुआ इस परम्परा को जीवित रखने के लिए प्रतिवर्ष राव् (राजा) की गैर निकाली जाती है। मण्डोर में निकलने वाली राव की गैर यह प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जिस प्रकार मण्डोर पर आक्रमण किया गया था, उसी तरह आज भी विजयी रूप में राव की गैर निकलती है। वर्ष 2016 चैत्र वदी एकम को सैनिक क्षत्रिय समाज के द्वारा 625 वीं वीर शिरोमणी राव हेमा गहलोत की गैर निकाली गई थी। वि. सं. 1776 (1719 ई.) में तत्कालीन महाराजा अजीतसिंह जी ने पुरानी मूर्तियां हटाकर काला गोरा भैरव व गणेश जी की नई मूर्तियां स्थापित की। पहले जो छोटे थान को बड़ा किया व देवताओं की साल बनाई और उसमें बड़ी-बड़ी मूर्तियां स्थापित की। आज भी राव हेमा गहलोत द्वारा थापित काला गोरा भैरव की मूर्तियां मौजूद हैं पर उनका स्थान परिवर्तित जरूर हुआ है। महाराजा अजीत सिंह जी के काल में नई मूर्तियां थापित की गई तब काला व गोरा भैरव के पास इन पुरानी मूर्तियों को भी थापित किया गया। राव हेमा गहलोत द्वारा थापित मूर्तियां होने व सदियों से वंशजों द्वारा पूजा होना यह प्रमाणित करता है कि इन गहलोत वंशजों का निजी मंदिर रहा है।

भैरवनाथ खेमे का कुआं, जोधपुर—पाल रोड़ स्थित खेमे का कुआं राव हेमा गहलोत के वशंज खेमजी गहलोत द्वारा संवत् 1896 (1839 ई.) में जोधपुर नरेश मानसिंह जी के काल में खुदवाया गया। इस कुएं पर भी बाण माता व भैरव का मंदिर स्थित है कहा जाता है कि खेमजी द्वारा काला व गौरा भैरव मण्डोर से लाकर यहाँ थापित किया।

भैरवनाथ कोडमदेशर बीकानेर—राव हेमा गहलोत के पौत्र राव चाहायड़ (पुत्र राव थीरपाल गहलोत) राव जोधा के पुत्र राव बीका जी का धाभाई था। एक रात चाहायड़ की माँ को स्वप्न में गौर वर्ण भैरव ने कहा कि राव बीकाजी का राज्य जांगल प्रदेश में होगा। वह प्रदेश वगैर शासक के पड़ा है और उत्तम भी है। प्रातः होने पर माँ नें पुत्र को अपने स्वप्न का विवरण कह सुनाया। राज दरबार में आने पर चाहायड़ ने राव बीकाजी को अपनी माँ के स्वप्न का वृत्तांत प्रगट किया। राव अपने चाचा कांधल से विचार विमर्श करने लगे। उसी समय दरबार में राव जोधा का आगमन हुआ,

उन्होंने दोनों को विचार विमर्श करते देख हँसकर कहा कि आज काका और भतीजा कौनसे मुल्क को फतह करने की सलाह कर रहे हैं। कांधल ने प्रत्योत्तर में कहा कि आपकी कृपा दृष्टि हो तो एक मुल्क लेना कौनसी बड़ी बात है। राव जोधा ने प्रत्येक प्रकार की सहायता करने का आश्वासन दिया। राव बीका ने 100 घुड़सवारों 500 पदातियों कांधल, बीदा, नापा सांखला, बेला पहिहार व चाहायड़ के साथ 1522 आसोज सुदी दशम (30 सितम्बर 1465, बुधवार) को जोधपुर से प्रस्थान किया। चाहायड़ गहलोत अपने साथ मण्डोर से गौर वर्ण भैरव (गोरा भैरवजी की मूर्ति) साथ लाए। उसकी स्थापना बीकानेर से 15 मील दूर कोडमदेशर बीकानेर में की। आज भी वहाँ पूजा चाहायड़ राव गहलोत के वंशज करते हैं। बड़ा मेला भादवा सुदी तेरस को कोडमदेशर बीकानेर में भरता है। श्री भैरवनाथ कोडमदेशर के पुजारी भोपा कहलाते हैं। (सैनी क्षत्रिय समाज का इतिहास—बलदेव सिंह कच्छवाह "आजाद" पृ. सं.-66)

एक गहलोत माली बीकाजी के साथ मण्डोर से काले गोरे भैरव जी की मूरत ले के गया था। उसकी औलाद बीकानेर में है उनमें से एक शख्स को जो महाराजा डूंगर सिंह जी का धाभाई था सोना भी मिला है। (रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़-1891 ई., हिन्दी, पृ. 91)

भैरवनाथ किशमीदेशर बीकानेर—राव लूणसिंह जी की महारानी किशनादे के नाम से किशमीदेशर नाम आबाद हुआ। गांव किशमीदेशर में भी गोरा भैरवनाथ की मूर्ति संवत् 1545 (1488 ई.) में थापित की। यहाँ भी चाहायड़ जी के वंशज ही पुजारी है। चाहायड़ जी के वंशज किशमीदेशर में निवास करते हैं।

भैरवनाथ मांडा सोजत—राव बहियों के अनुसार राव हेमा गहलोत के वंशज में गोपा पुत्र नरबद निवासी जूनी बस्ती मण्डोर से भैरवनाथ की मूर्ति संवत् 1605 (1548 ई.) में हाकम हिंगलाजी के साथ गायों व लाटा भोग के कारण हुए झगड़े में अपनी माता सहित पुत्र गोयन्द, धर्मो, हरदास, हरको सहित बैलगाड़ी से मण्डोर से रवाना हुए। श्री भैरवनाथ हुकम दीनो

के नरबद थाणे जटे बसनों हुए बसजे पचे पाचो फिरने देखज मती। नरबद मांडा की कांकण में आए पीछे देखा वहीं पर गाड़िया रूक गई नीचे उतरकर नरबद ने भैरवनाथ की मूर्तियां मांडा में संवत् 1606 (1549 ई.) में महाराजा मालदेवजी व सेहवाज ठाकुर सीबुसिंह चम्पावत के समय स्थापित कर वहीं निवास किया फिर मरडावों में तत्कालीन ठाकुर सेहवाज रार्मसिंह जी जैतावत ने गांव में पनाह दी। आज तक उनके वंशज पूजा करते आ रहे हैं।

रींगस सीकर—मंदिर पुजारी ग्यारसीलाल भोपा बताते हैं कि इनके पूर्वज मण्डोर से 500 वर्ष पूर्व आकर बसे। इन्होंने यहाँ भैरवजी को थापित किया था। इनके यहां आने पर पुत्र प्राप्ति होने तथा दुःख दर्द हरने से यह दिनों दिन प्रसिद्ध होता गया। यहां प्रतिवर्ष भाद्रपद के शुक्ल पक्ष आने वाले रविवार को वार्षिक बड़ा मेला होता है। इसके अलावा प्रत्येक रविवार को भी श्रद्धालु आते हैं।

उज्जैन—श्री मंगल सिंह जी गहलोत पुत्र रामकरण जी गहलोत के अनुसार कुचेरा नागौर से करीब 360 वर्ष पहले काला गोरा भैरव जी मकर संक्रांति के दिन पीपली नाका चौराहा, गढ़ कालिका रोड़ उज्जैन में इनके पूर्वजों द्वारा थापन किया उज्जैन के युद्ध (धरमत का युद्ध महाराज जसवंत सिंह प्रथम जोधपुर वि. सं. 1709-10) में घायल होने के बाद इनके पूर्वज परिवार सहित वहीं बस गये। प्रत्येक वर्ष मकर संक्रांति के दिन अभिषेक व हवन किया जाता है जो 21 दिन चलता है। 21 दिन में पड़ने वाले अंतिम रविवार के दिन भण्डारा किया जाता है। आज तक उनके वंशज पूजा करते आ रहे हैं। उज्जैन में साढ़े तीन भैरव हैं, जो विश्व में कहीं नहीं है।

प्रमाणिकता उपरोक्त सभी स्थानों पर स्थापित भैरव मंदिरों से प्रमाणित होता है कि जहाँ पर भी सैनिक क्षत्रिय गहलोत परिवार जाकर बसते थे वहाँ पर हमेशा काला गोरा भैरव व कुल देवी ब्राह्मणी माता का थान अवश्य थापित करते थे जो साधारणतया बेरे व बावड़ी के पास स्थित होता था चाहे मण्डोर के काला गौरा भैरव हो या अन्यत्र कहीं, मारवाड़ या मारवाड़

के बाहर हो एक छोटा सा थान जरूर स्थापित करते थे।

"ओर भैरू जी री बावड़ी तो आदु है (प्राचीन) नै मरमत माराज कराई ने ऊपर भैरू जी रो थान छोटौ थौ तिको मोटो करायौ। काला गोरा भैरू जी है नै विचे गजानंद है सो बड़ी मूरती कोराय थापनी कीवी 1776 संवत् (1719 ई.) में। (नारायण सिंह भाटी—मारवाड़ रा परगनां री विगत—परिशिष्ट 1 क पृ. सं.-556)

महाराजा अजीत सिंह ने भैरव मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया तथा मंदिर का आकार भी बढ़ाया। मंदिर में स्थापित काले गोरे भैरव जी की मूर्तियों के बीच में महाराजा अजीत सिंह जी ने गजानंद की मूर्ति स्थापित करवाई। रानीमंगा बही से ज्ञात होता है कि महाराजा अजीत सिंह जी ने काला गोरे भैरव जी की मूर्तियां भी बनवाई तथा तभी से जोधपुर राजघराने में विवाह होने पर दुल्हे-दुल्हन द्वारा यहाँ पर जात दी जाने की परंपरा का शुभारंभ हुआ। (महेन्द्र सिंह तंवर—मारवाड़ का पुरातत्व और स्थापत्य, पृ. सं.-85)

मण्डोर में भी काले गोर भैरव की भी पूजा गहलोत वंश ही करते हैं। जोधपुर, लखनऊ, काठियावाड़ आदि स्थानों में जानकी व शीतला देवी के मंदिरों के पुजारी भी स्वजाति के बंधु है। (सैनी क्षत्रिय समाज का इतिहास—श्री बलदेव सिंह कच्छवाह आजाद, पृ. सं.-66)।

कुछ गहलोत माली तनाहपीर दरगाह, मण्डोर की कवर के मुजावर है ये तनाहपीर के मुजावर राव हेमा गहलोत की पांचवींपीढ़ी के वंशज बालू गहलोत के दो पुत्र मुसलमान बन जमाल व अहमद नाम रख लिये थे इन्हीं के वंशज आज से 125 वर्ष पूर्व तक मुजावर थे।

कर्नल टॉड ने इस प्रकार लिखी है—नाहड़राव के स्मारक की देखभाल और दूसरे कार्यों के लिए एक नाई रखा गया है जो निरंतर वहाँ पर रहकर अपना कार्य करता है। यहाँ नाहड़राव का पुजारी एक माली है जो रोज झाड़ू लगा कर चार जगह फूल चढ़ाता है और धूपबत्ती करता है एक स्थान पर दीवार पर बहुत सा सिंदूर लगा है और माली पन्ना नाम लिखा

है (रामलखन सिंह—प्रतिहार राजपूतों का इतिहास, पृ. सं.-18 : Annals & Antiqities of Rajsasthan-Col. James Tod अनुवादक—केशव कुमार ठाकुर पृ. सं.-908)।

अतः यह प्रमाणित होता है कि राव हेमा गहलोत द्वारा ही काला गोरा भैरव व ब्राह्मणी माता की थापना वि. सं. 1466 चैत्र की एकम (12 मार्च 1389, सोमवार) को की थी। इसी थान का महाराजा अजीत सिंह द्वारा काला गौरा भैरव की बड़ी मूर्तियां थापित कर पुरानी मूर्तियों को इसके पास में थापित की और मंदिर का आकार बढ़ाया। इसके बाद ही राज परिवार द्वारा विवाह उपरान्त जात लगाने की परम्परा शुरू होने से सभी जाति धर्म के लोगों में भी भैरू पूजा की आस्था बढ़ी और लोगों में पूजा की मान्यता प्रचलित हुई, जो आज भी जारी है। अतः गहलातों का निजी मंदिर होने के कारण राजपरिवार द्वारा दखल नहीं दिया गया। इस मंदिर की पूजा अर्चना राव हेमा गहलोत के वशजों द्वारा ही की जा रही है। ❑

वीर शिरोमणि राव हेमा गहलोत की ऐतिहासिक प्रमाणिकता

1. रावों की बहियों के अनुसार राव हेमा गहलोत के परिवार का मण्डोर में आगमन सं. 1375 (1318 ई.) हुआ।
2. राव चूंडा जी के पिता राव वीरम जी का प्रधान दौला गहलोत का होना जिससे पारिवारिक सम्बन्ध ज्ञात होता है।
3. राव हेमा गहलोत द्वारा मण्डोर में काला गोरा भैरू व कुलदेवी माता (माता/बाण माता) की थापना संवत् 1446 चैत्र कृष्ण एकम (12 मार्च 1389, सोमवार) प्रतिपदा को होना।
4. राव हेमा गहलोत द्वारा भैरव बावड़ी निर्माण।
5. मरदुमशुमारी मारवाड़ 1891 ई. राव हेमा गहलोत को बालेसर के ईंदा परिहारों का प्रधान बताया जाना।
8. अपनी प्रधानी में मण्डोर पर से तुर्कों को हटाने में राव हेमा गहलोत की महत्त्वपूर्ण भूमिका।
9. राव चूंडा जी को मण्डोर में राज दिलाने की कोशिश में शामिल।
10. राव चूंडा जी के मण्डोर में अमल हो जाने के बाद इकरार के माफिक मण्डोर की भूमि माफी देना।
11. राव बहियों के अनुसार राव हेमा गहलोत द्वारा राव चूंडा जी को राजतिलक करना।
12. राव हेमा गहलोत द्वारा शुरू की गई राव महोत्सव (राव जी की गैर), इनके वंशजों द्वारा विजय उत्सव के रूप में काला गोरा भैरू व कुलदेवी ब्राह्मणी माता (रायक माता, बाण माता) की थापना संवत् 1446 चैत्र कृष्ण एकम (12 मार्च 1389, सोमवार) के दिन मनाया जाना।
13. मुहता नैणसी की ख्यात में वर्णित राव चूंडा को शकुनी लोगों द्वारा दूसरा पट्टाभिषेक करना।
14. राव हेमा गहलोत के पौत्र राव चाहायड़ राव चूंडा जी के पौत्र बीका जी का धाभाई होना व गोरा भैरव मूर्ति बीकानेर के कोडमदेशर में स्थापित करना।

❑